धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

एफ.टी.एस 919793 शिक्षा मंत्री
दिनांक/Dated 27/08/2021

27 AUG 2021

प्रिय श्री नीतीश मिश्रा जी,

आपका दिनांक 09 अगस्त, 2021 को प्रेषित पत्र (सं.) 276/2021 प्राप्त हुआ जो कि मिथिला संस्कृत स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध संस्थान, दरभंगा को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय से संबद्धता प्रदान किये जाने के संदर्भ में है।

सादर,

भवदीय,

(धर्मेन्द्र प्रधान)

श्री नीतीश मिश्रा,
सदस्य
बिहार विधान सभा,
112, कौटिल्य नगर,
पटना-800014

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

नीतीश मिश्रा
पूर्व मंत्री
बिहार सरकार

सदस्य
बिहार विधान सभा

Ref: 276/2021
Dt-9-8-2021

आदरणीय मंत्री महोदय,

विषयः—**बिहार में 1951 में स्थापित 'मिथिला संस्कृत स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध संस्थान, दरभंगा' को केन्द्र सरकार द्वारा सेंट्रल संस्कृत यूनिवर्सिटी एक्ट 2020 के तहत केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के अधीन संबद्धता प्रदान करने के संबंध में।**

आधुनिकता के दौर में संस्कृत जगत की उपयोगिता एवं विकास में अत्यधिक ह्रास हुआ है। प्राचीन मैथिला संस्कृत परम्परा की कमी दृष्टिगत होने के उपरांत संस्कृत के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु तत्कालीन दरभंगा महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह द्वारा बागमती के तट पर कबरा घाट, दरभंगा में लगभग 62 एकड़ भूमि तथा साढ़े तीन लाख रूपया के सहयोग से दिनांक 16 जून 1951 को शिक्षा विभाग (उच्च शिक्षा) बिहार सरकार द्वारा मिथिला संस्कृत स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध संस्थान की स्थापना की गयी।

इस संस्थान के मुख्य भवन का शिलान्यास भारतवर्ष के प्रथम राष्ट्रपति स्वनामधन्य महामहिम डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपने कर–कमलों से किया था तथा 10 मार्च 1952 से इस संस्थान ने कार्य करना प्रारंभ कर दिया।

इस संस्थान का उद्देश्य प्राचीन मनिषियों के गंभीर ज्ञान तथा अर्वाचीन शोध प्रज्ञो की नवीन प्रतिभा के संगम, शोधार्थियों को नवीन वैज्ञानिक एवं तकनीकी शोध प्रक्रिया से अवगत कराना है। संस्कृत के पारम्परिक पंडित एवं आधुनिक विद्वानों द्वारा उच्च स्तरीय वैज्ञानिक अनुसंधान का विकास, महत्वपूर्ण पांडूलिपियों का संकलन–संरक्षण एवं उच्चस्तरीय पुस्तकों का प्रकाशन करना है।

पूर्व में इस संस्थान की संबद्धता तत्कालीन बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से थी जो परीक्षार्थियों एवं शोध गवेषकों को उपाधि प्रदान करता था। वर्ष 1973 से इसकी संबद्धता ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा से कर दी गयी है।

इस संस्थान द्वारा वर्तमान समय में संस्कृत परास्नातक, पीएच॰डी॰ एवं डी॰लिट की उपाधि प्रदान की जाती है। संस्थान के अंतर्गत शोधार्थियों द्वारा कई महत्वपूर्ण शोध–कार्य किये गये हैं। संस्थान के द्वारा उच्च स्तरीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शोध के साथ लगभग 100 ग्रथों एवं स्थायी महत्व के पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य किया गया है।

संस्थान में वेद, पुराण, ज्योतिष तंत्र, कर्म–काण्ड, दर्शनादि विषयक देवनागरी, मिथिलाक्षर, बंगलाक्षर लिपि में संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वानों के हस्तलेख उपलब्ध हैं। प्राच्य

112, कौटिल्य नगर, पटना 800014
Tel. : 0612 222 6263 Fax : 0612 222 5218 E-mail : nitishmishraoffice@gmail.com
/NitishMishraOfficial @mishranitish www.jhanjharpur.co.in

विद्या सहित 25 हजार से अधिक दुर्लभ ग्रंथ उपलब्ध हैं। संस्थान में संस्कृत पांडूलिपि का जितना संग्रह उपलब्ध है भारतवर्ष में अन्यत्र नहीं।

वर्तमान परिदृश्य में मिथिला स्नातकोत्तर शोध संस्थान के संवर्द्धन हेतु केन्द्र सरकार द्वारा सेंट्रल संस्कृत यूनिवर्सिटी एक्ट 2020 के तहत राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जो वर्तमान में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय है, के अंतर्गत अन्य संस्थाओं की भाँति शामिल किया जाय तो प्राचीन काल से प्रसिद्ध मिथिला क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को विकसित तथा प्रचारित करने में योग, आयुर्वेद आदि के विकास हेतु एक नया आयाम स्थापित होगा।

वर्तमान समय में विभिन्न राज्यों में इस केन्द्रीय विश्वविद्यालय के स्वायत्त परिसर यथा उत्तर प्रदेश, त्रिपुरा, जम्मू, उड़ीसा, मध्य प्रदेश आदि में स्थापित है। बिहार में ऐसा कोई परिसर नहीं है। सेंट्रल संस्कृत यूनिवर्सिटी एक्ट 2020 में नव परिसर निर्माण का उल्लेख भी है।

अतः अनुरोध है कि मिथिला संस्कृत स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध संस्थान, दरभंगा को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के अधीन संबद्धता देने पर विचार करना चाहेंगे ताकि इससे मिथिला ही नहीं बल्कि संपूर्ण बिहार लाभान्वित हो सके।

सादर,

भवदीय

Nitish Mishra

(नीतीश मिश्रा) 9.8.21

सेवा में,

श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी,
माननीय शिक्षा मंत्री,
भारत सरकार,
नई दिल्ली।